Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वरलक्ष्मी व्रत पूजा विधि ॥

॥ जय माँ वरलक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजा की तैयारी और सामग्री ॥

१. दिन और संकल्प

वरलक्ष्मी व्रतम सामान्यतः श्रावण पूर्णिमा से पहले के शुक्रवार को किया जाता है। तिथि और पूजा समय के लिए अपने स्थान का पंचांग देखें। स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनें और श्रद्धा से पूजा का संकल्प लें।

२. पूजा सामग्री

वरलक्ष्मी का चित्र या सजा हुआ कलश, चौकी, साफ कपड़ा, जल, अक्षत, फूल, हल्दी, कुमकुम, चंदन, धूप, दीप, फल और घर का सात्त्विक नैवेद्य रखें। नारियल, पत्ते, मौली या तोरम तथा पान-सुपारी परिवार की रीति के अनुसार रखें।

३. पूजा स्थान

चौकी पर कलश स्थिर रखें और देवी का मुखौटा हो तो सुरक्षित लगाएँ। जलते दीप के आसपास कपड़े, फूल और बच्चों से उचित दूरी रखें। कलश स्थापना की विस्तृत तैयारी इस विषय की अलग PDF में दी गई है।

कहीं महिलाएँ विशेष व्रत रखती हैं और कहीं परिवार मिलकर पूजा करता है। व्रत का भोजन, सूत्र की गाँठें और सामग्री की संख्या क्षेत्र के अनुसार बदलती है। अपनी क्षमता और परिवार की रीति के अनुसार सरल पूजन करें।

॥ क्रम से वरलक्ष्मी पूजा ॥

४. गणेश स्मरण और आवाहन

पहले गणेशजी का स्मरण करें। फिर वरलक्ष्मी का ध्यान करके कलश या प्रतिमा के सामने पुष्प और अक्षत चढ़ाएँ। मन में घर के सभी लोगों के मंगल तथा सबके प्रति शुभ भाव का संकल्प करें।

५. अर्पण, कथा और आरती

हल्दी-कुमकुम, चंदन, फूल, धूप, दीप, फल और नैवेद्य अर्पित करें। “ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः” का जप करें। चारुमति की कथा पढ़ें या सुनें और अपनी परंपरा से आरती करें। कुछ घरों में तोरम या रक्षा सूत्र बाँधकर स्त्रियाँ एक-दूसरे को हल्दी-कुमकुम देती हैं।

६. प्रसाद और समापन

देवी को प्रणाम कर प्रसाद बाँटें। कलश और सूत्र के समापन की रीति घर के अनुसार करें। उपवास हो तो अपने स्वास्थ्य के अनुसार जल और भोजन लें; बीमारी, गर्भावस्था या दवा की स्थिति में चिकित्सकीय सलाह को प्राथमिकता दें।

पूजा की वस्तुओं का दिखावा या निर्धारित संख्या आवश्यक नहीं। श्रद्धा, स्वच्छता और साझा आनंद से साधारण सामग्री में भी पूजा की जा सकती है।

॥ जय माँ वरलक्ष्मी ॥